पुना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

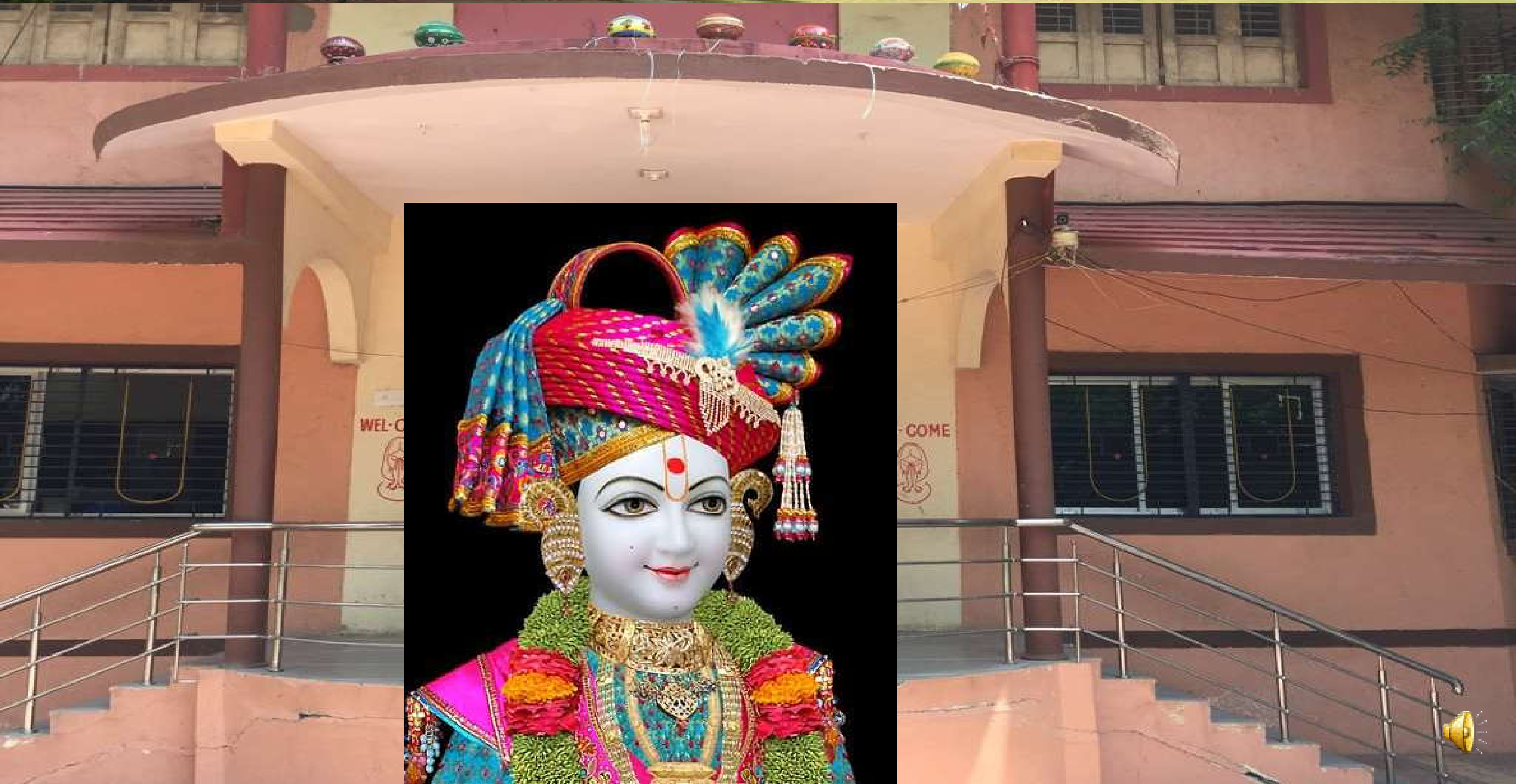

Mountaineer Bachendri Pal

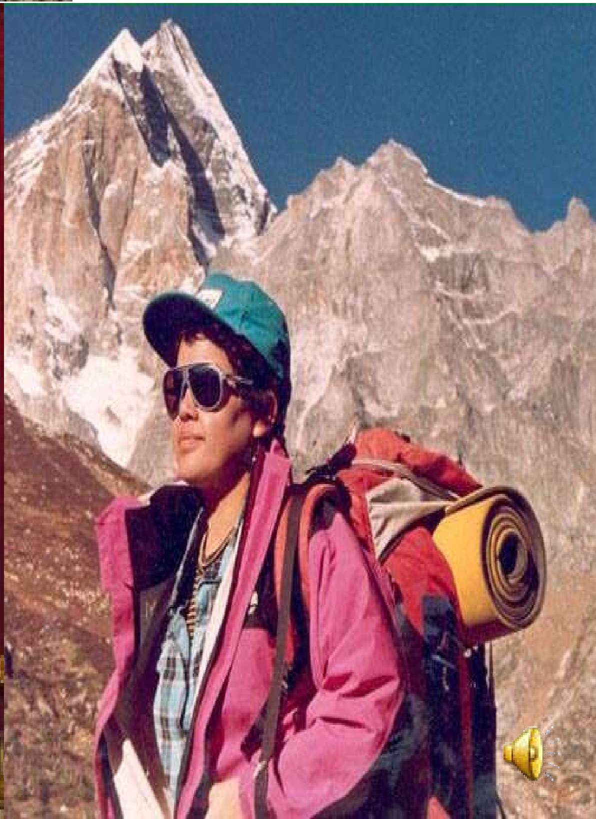

pa#-Õ-0vre3 :-mel ixqr ya5a

विश्व की सबसे उची चोटी माउंट एवेरस्ट पर चढाई करने वाले भारतीयों में बछेंद्री पाल का नाम आता है पहली भारतीय महिला है | वो ना केवल एक बार बल्कि दो बार माउंट एवरेस्ट पर तिरंगा फहरा चुकी है | एक साधारण परिवार में जन्मी इस आत्मविश्वासी और बहादुर महिला की जीवनी से आज आपको रूबरू करवाते है |

बछेंद्री पाल का प्रारम्भिक जीवन: बछेंद्री पाल (Bachendri Pal) का जन्म 24 मई 1954 को भारत के उत्तरांचल जिले के गढ़वाल जिले के एक छोटे से गाँव नकुरी में हुआ था | उनके पिता का नाम किशनपाल सिंह और माता का नाम हंसा देवी था | किशनपाल सिंह एक साधारण व्यापारी थे जो अपने पांच बच्चो के पालन पोषण करने के लिए गेहू , चावल और किराणे के सामान खच्चरों पर लादकर तिब्बत ले जाते थे और वहा से तिब्बती सामान लाकर गढ़वाल में बेचते थे | उस समय भारत के चीन के साथ अच्छे सम्बन्ध थे इसलिए तिब्बत आने जाने में कोई परेशानी नही होती थी | जब भारत के साथ चीन की लड़ाई हुयी उसके बाद बछेंद्री पाल के पिता का व्यवसाय ठप्प हो गया और वौ अपने परिवार के साथ आकर काशी बस गये |

बछेंद्री पाल बचपन से ही बहुत चुस्त थी जो पढ़ाई के साथ साथ खेलकुद में भी अव्वल रहती थी | उनको पर्वतारोहण का शौक बचपन से था जिसके कारण केवल 12 वर्ष की उम्र में स्कूल पिकनिक के दौरान 13,123 फीट की उचाई पर आसानी से चढ़ गयी थी | जब वो अपने सहपाठीयो के साथ चोटी पर पहुची तो मौसम अचानक खराब हो गया और उस दल को उस चोटी पर ही रात गुजारनी पड़ी | बिना भोजन पानी के उस रात को बछेंद्री पाल कभी नही भूल पायी और उसी दिन से उसके मन में पर्वतों के प्रति प्रेम ऑर ज्यादा बढ़ गया | बड़ी मुश्किल से उन्होंने मैट्रिक उच्च माध्यमिक शिक्षा उत्तीर्ण की |

अब उनके माता पिता Bachendri Pal बछेंद्री पाल को ओर ज्यादा पढ़ाने के पक्ष में नही थे लेकिन महाविध्यालय के प्राचार्य के कहने पर बछेंद्री पाल ने कॉलेज में दाखिला ले लिया | अब कॉलेज ने उन्होंने शूटिंग भी सीखी और एक शूटिंग प्रतियोगिता में भी विजय प्राप्त की | उसके बाद बछेंद्री पाल ने स्नातकोत्तर उअर बी.एड. की परीक्षा भी उत्तीर्ण की |

लेकिन बछेंद्री पाल कहा मानने वाली थी और बड़ी जिद्दी थी इस कारण बछेंद्री पाल ने उत्तराकाशी के नेहरु इंस्टिट्यूट ऑफ़ माउंटेनियरिंग में प्रवेश ले लिया | उस प्रशिक्षण केंद्र में उनका प्रदर्शन इतना अच्छा था कि उनको केंद्र का सर्वश्रेष्ठ छात्रा घोषित किया गया | इंस्टीट्यूट वाले जानते थे कि इस लडकी में एवरेस्ट में चढने की काबिलियत है और उसे इसके योग्य मानते थे |उन्होंने संस्थान में प्रशिक्षण के दौरान 21,900 फीट उचे गंगोत्री शिखर और 19,091 फीट उचे रदूगरिया शिखर पर आरोहण किया था | उनकी इसी काबिलियत के कारण उनको Foundation (NAF) में नौकरी मिल गयी | वहा पर वो महिलाओं को पर्वतारोहण का प्रशिक्षण देने का काम करती थी | इस तरह के पर्वतारोहण प्रशिक्षण के दौरान मानसिक रूप से एवरेस्ट चढने के लिए तैयार हो गयी थी |

1984 में मई के महीने में दल ने शिखर पर चढाई शुरू की और 15-16 मई को वो दल 24 हजार फीट की उचाई पर पहुच गया | अब 24000 फीट चढ़ने के बाद दल ने टेंटो में आराम करने का विचार किया और उसी रात एक जोरदार धमाका हुआ | Bachendri Pal बछेंद्री पाल और दल के साथियो ने जब बाहर निकलकर देखा तो उनका पूरा शिविर चारो ओर बर्फ से ढक गया था क्योंकि शिविर के उपर से एक हिमखंड टूटकर उनके उपर गिर गया था | अब पर्वतारोहियों ने चाकुओ से बर्फ को काट काटकर बाहर निकलने का रास्ता बनाया | इस घटना में दल के कई लोग घायल हो गये थे जिनको वापस नीचे बेस कैंप में पहुचाया गया | अब Bachendri Pal बछेंद्री पाल उस घटना से सुरक्षित थी केवल सर में हल्की चोट आयी थी फिर भी उसने विपदाओ से बिना डरे आगे बढ़ने का फैसला लिया | अब 22 मई 1984 को नये पर्वतारोही दल में शामिल हो गयी क्योंकि पुराना दल वापस बेस कैंप जा चूका था | इस नये दल में बछेंद्री पाल एकमात्र महिला थी जो बड़े जोश से आगे बढ़ रही थी | अब 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही बर्फीली हावाओ में भी उन्होंने सीधी चढाई करना जारी रखा | अब तापमान भी गिरकर शून्य से 40 डीग्री कम हो गया था फिर भी बछेंद्री पाल उस दल के साथ हिम्मत से आगे बढ़ रही थी | 23 मई 1984 को दोपहर एक बजकर सात मिनट पर बछेंद्री पाल ने एवरेस्ट चोटी पर पहुचकर एक इतिहास रच डाला और एवरेस्ट पर चढने वाली पहली भारतीय महिला का ख़िताब पा लिया जिसे कोई नही तोड़ सकता था | उस शिखर पर एक समय में केवल दो व्यक्ति ही रुक सकते थे क्योंकि चारो ओर हजारो फीट गहरी खाई थी और थोड़ी सी चुक पर जान जा सकती थी |

अब Bachendri Pal बछेंद्री पाल ने बर्फ में अपनी कुल्हाडी गाडकर अपने आप को स्थिर किया और घुटनों के बल बैठकर ईश्वर को अपना सपना पूरा करने के लिए धन्यवाद दिया |

अब उसने अपने बैगपैक में से दुर्गा माता की तस्वीर और हनुमान चालीसा निकली और उन्हें बर्फ पर रख दिया | इस तरह एवरेस्ट का शिखर चूमने वाली पहली भारतीय और विश्व की पांचवी महिला बन चुकी थी | उनकी इस उपलब्धि के लिए भारत के राष्ट्रपति , प्रधानमंत्री और अन्य चर्चित लोगो ने उन्हें व्यक्तिगत बधाई दी |

माउंट एवेरेस्ट पर चढाई के बाद :-

अब माउंट एवेरेस्ट पर चढने के बाद भी वो रुकी नही और 1993 में एक बार फिर Bachendri Pal बछेंद्री पाल के नेतृत्व में भारत व नेपाल के महिला पर्वतारोहियो के साथ एक बार फिर एवरेस्ट पर विजय प्राप्त की | इस टीम में उन्होने 18 पर्वतारोहियों को शिखर तक पहुचाया था जिसमे केवल 7 महिलाये थी जो बहुत आस्चर्य की बात थी | उसके बाद उन महिलाओं ने बछेंद्री पाल के नेतृत्व में The Great Indian Women's Rafting Voyage – 1994 और First Indian Women Trans-Himalayan Expedition – 1997 का निर्माण किया जिन्होंने Rafting और Trekking के कई Adventurous कार्य किये |उसके बाद Bachendri Pal बछेंद्री पाल ने साहस और रोमांच से भरी कई गतिविधिया का नेतृत्व किया | वर्तमान में वो टाटा स्टील कम्पनी में नये युवक-युवतियों को पर्वतारोहण का प्रशिक्षण देने लग गयी |

तो Bachendri Pal बछेंद्री पाल से हमे ये शिक्षा मिलती है कि महिलाये भी किसी भी काम में पुरुषो से कम नही है बस आगे बढ़ने की देर है |

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए –

1. अग्रिम दल का नेतृत्व कौन कर रहा था?

उत्तर:- अग्रिम दल का नेतृत्व प्रेमचंद कर रहे थे।

---

2. लेखिका को सागरमाथा नाम क्यों अच्छा लगा?

उत्तर:- एवरेस्ट को नेपाली भाषा में सागरमाथा नाम से जाना जाता है। लेखिका को सागरमाथा नाम अच्छा लगा क्योंकि सागर के पैर नदियाँ हैं तो सबसे ऊँची चोटी उसका माथा है और यह एक फूल की तरह दिखाई देता है, जैसे माथा हो।

---

3. लेखिका को ध्वज जैसा क्या लगा?

उत्तर:- लेखिका को एक बड़े भारी बर्फ़ का बड़ा फूल (प्लूम) पर्वत शिखर पर लहराता हुआ ध्वज जैसा लगा।

---

4. हिमस्खलन से कितने लोगों की मृत्यु हुई और कितने घायल हुए?

उत्तर:- हिमस्खलन से एक की मृत्यु हुई और चार घायल हो गए।

---

5. मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने क्या कहा?

उत्तर:- एक शेरपा कुली की मृत्यु तथा चार के घायल होने के कारण अभियान दल के सदस्यों के चेहरे पर छाए अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने कहा कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु को भी सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए।

---

6. रसोई सहायक की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर:- प्रतिकूल जलवायु के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई है।

---

7. कैंप-चार कहाँ और कब लगाया गया?

उत्तर:- कैंप-चार २९ अप्रैल को सात हजार नौ सौ मीटर की ऊँचाई पर लगाया गया था।

---

8. लेखिका ने शेरपा कुली को अपना परिचय किस तरह दिया?

उत्तर:- लेखिका ने शेरपा कुली को अपना परिचय यह कह कर दिया कि वह बिल्कुल ही नौसिखिया है और एवरेस्ट उसका पहला अभियान है।

---

9. लेखिका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने उसे किन शब्दों में बधाई दी?

उत्तर:- लेखिका की सफलता पर बधाई देते हुए कर्नल खुल्लर ने कहा, "मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में जाओगी जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा।"

- प्रश्न-अभ्यास (लिखित)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए –

10. नज़दीक से एवरेस्ट को देखकर लेखिका को कैसा लगा?

उत्तर:- नजदीक से एवरेस्ट को देखकर लेखिका को इतना अच्छा लगा कि वह भौंचक्की रही गई। वह एवरेस्ट ल्होत्से और नुत्से की ऊँचाइयों से घिरी बर्फ़ीली टेढ़ी-मेढ़ी नदी को निहारती रही।

---

11. डॉ.मीनू मेहता ने क्या जानकारियाँ दीं?

उत्तर:- डॉ.मीनू मेहता ने उन्हें निम्न जानकारियाँ दीं –

- अल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना।
- लट्ठों और रस्सियों का उपयोग करना।
- बर्फ़ की आड़ी -तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना।
- अग्रिम दल के अभियांत्रिक कार्यों की जानकारी दी।

---

12. तेनज़िंग ने लेखिका की तारीफ़ में क्या कहा?

उत्तर:- तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ़ में कहा कि वह एक पर्वतीय लड़की है। उसे तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए। कठिन और रोमांचक कार्य करना उनका शौक था। वे लेखिका की सफलता चाहते थे और उन्हें पूरी आशा थी कि वे होंगी।

---

13. लेखिका को किनके साथ चढ़ाई करनी थी?

उत्तर:- लेखिका को अपने दल के साथ तथा जय और मीनू के साथ चढ़ाई करनी थी। परन्तु वे लोग पीछे रह गए थे।

---

14. लोपसांग ने तंबू का रास्ता कैसे साफ़ किया?

उत्तर:- तंबू के रास्ते एक बड़ा बर्फ़ पिंड गिरा था जिसने कैंप को तहस-नहस कर दिया था। लोपसांग ने अपनी स्विस छुरी की सहायता से तंबू का रास्ता साफ़ किया और लेखिका को बाहर निकाला।

---

15. साउथ कोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी कैसे शुरू की?

उत्तर:- साउथ कोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। उन्होंने खाना, कुकिंग गैस तथा कुछ ऑक्सीजन सिलिण्डर इकट्ठे किए। अपने दल के दूसरे सदस्यों को मदद करने के लिए एक थर्मस में जूस और दूसरे में चाय भरने के लिए नीचे उतर गईं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए –

16. उपनेता प्रेमचंद ने किन स्थितियों से अवगत कराया?

उत्तर:- उपनेता प्रेमचंद ने अभियान दल के सदस्यों को निम्न स्थितियों से अवगत कराया –

- पहली बड़ी बाधा खुंभु हिमपात की स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने यह भी बताया कि उनके दल ने कैंप – एक (6000 मीटर), जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया।

• भाषा अध्ययन

26. इस पाठ में प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या पाठ का संदर्भ देकर कीजिए – निहारा है, धसकना, खिसकना, सागरमाथा, जायज़ा लेना, नौसिखिया

उत्तर:- निहारा है – एवरेस्ट की चोटी को बचेंद्री पाल ने निहारा है।
धसकना – खिसकना – ये दोनों शब्द हिम – खंडो के गिरने के संदर्भ में आए हैं।
सागरमाथा – नेपाली एवरेस्ट चोटी को सागरमाथा कहते हैं।
जायज़ा लेना – यह शब्द प्रेमचंद ने कैंप के परीक्षण निरीक्षण कर स्थिति के बारे में प्रयुक्त हुआ है।
नौसिखिया – बचेंद्री पाल ने तेनजिंग को अपना परिचय देते हुए यह शब्द प्रयुक्त किया है।

---

27. निम्नलिखित पंक्तियों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए –
(क) उन्होंने कहा तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए
(ख) क्या तुम भयभीत थीं
(ग) तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेंद्री

उत्तर:- (क) उन्होंने कहा,"तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।"
(ख) "क्या तुम भयभीत थीं"?
(ग) "तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली? बचेंद्री"।

---

28. नीचे दिए उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्द-युग्मों का वाक्य में प्रयोग कीजिए –
उदाहरण : हमारे पास एक वॉकी-टॉकी था।
1. टेढ़ी-मेढ़ी
2. गहरे-चौड़े
3. आस-पास
4. हक्का-बक्का
5. इधर-उधर
6. लंबे-चौड़े

उत्तर:- 1. टेढ़ी-मेढ़ी – उनके घर के रास्ते में टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियाँ है।
2. गहरे-चौड़े – चौराहे के गहरे-चौड़े नालों में हमेशा पानी भरा रहता है।
3. आस-पास – उसका घर यहीं आस-पास है।
4. हक्का-बक्का – मशहूर क्रिकेटर को पार्टी में देखकर मैं हक्का-बक्का रह गया।
5. इधर-उधर – शिक्षक का ध्यान हटते ही बच्चे इधर-उधर भागने लगे।
6. लंबे-चौड़े – रास्ते में लंबे – चौड़े साँप को देखकर मेरी घिग्घी बँध गई।

ic5-v`R

यह चित्र रेलवे प्लेटफॉर्म का है। यहाँ एक रेलगाड़ी खड़ी है। दो कुली सर पर सामान रख कर हाथ में अटैची पकड़े चल रहे हैं। जिस व्यक्ति का सामान है वह उनके साथ चल रहा है। एक बच्चा हाथ में अखबार लिए उनको बेच रहा है। दूसरी ओर एक बच्चा अपनी बूट-पॉलिश की दूकान खोल कर एक व्यक्ति के जूते पॉलिश कर रहा है। जिस व्यक्ति के जुटे पॉलिश किए जा रहे हैं वह अखबार पढ़ रहा है। किनारे पर एक कूड़ादान रखा हुआ है, परन्तु कूड़ा इधर-उधर पड़ा हुआ है। इस दृश्य में दो ऐसी बातें हैं, जैसे - बाल श्रम और गन्दगी, जो तब तक हल नहीं हो सकती जब तक प्रत्येक नागरिक इस ओर कार्य करना अपना कर्तव्य न समझे।

ic5 v`R kir0